बाइबल टीचर

वर्ष 22 जनवरी 2025 अंक 2

सम्पादकीय

सुसमाचार परमेश्वर की सामर्थ है

प्रेरित पौलुस, रोमियों 1:16 में कहता है कि ''मैं सुसमाचार से नहीं लजाता इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये परमेश्वर की सामर्थ है।'' सुसमाचार जिसे यीशु ने दिया इतना सामर्थपूर्ण है कि यह पाप से ग्रसित आत्माओं को बचा सकता है। नये नियम में हम इस सुसमाचार का उल्लेख पढ़ते हैं, जब पौलुस ने कहा था, ''हे भाईयो मैं तुम्हें वही सुसमाचार सुनाता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुमने अंगीकार भी किया है, और जिसमें तुम स्थिर भी हो। इसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैंने सबसे पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी जो मुझे पहुंची थी कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा (1 कुरि. 15:1-4)। यदि मनुष्य अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करना चाहता है तो उसके लिये सुसमाचार को मानना आवश्यक है।

जैसा कि पौलुस कहता है कि केवल एक सुसमाचार है जो सारी मनुष्यजाति के लिये दिया गया है। उसी समय कुछ ऐसे लोग भी थे जो बाइबल से हटकर किसी और प्रकार का सुसमाचार प्रचार कर रहे थे। जैसे कि आज भी बहुत से प्रचारक झूठी शिक्षाओं का प्रचार कर रहे हैं। प्रेरित पौलुस ने कहा था, ''मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया है उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नही पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते हैं और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुमको सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें

सुनाये, तो शापित हो।''

मसीह का सुसमाचार एक सिद्ध सुसमाचार है जो तमाम मनुष्य जाति के लिये दिया गया है। यह हमारे लिये एक स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था है। (याकूब 1:25)। अब इसमें कोई फेर बदल करने की आवश्यकता नहीं है। इस सुसमाचार में न हमें कुछ घटाना है और न ही कुछ बढ़ाना है। (प्रकाशित 22:18-19)। पुरानी व्यवस्था के द्वारा कोई अपने पापों से मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता। सबसे अच्छी बात यह है कि यीशु के आने से मनुष्यजाति को पापों से मुक्ति पाने की आशा प्राप्त हुई। जब मनुष्य पापी ही था तभी ठीक समय पर प्रभु यीशु हमारे लिये क्रूस पर मरा (रोमियों 5:8)।

आज सारी मनुष्यजाति के लिये यह सामर्थी सुसमाचार उपलब्द्ध है। (रोमियों 1:16)। यह एक ऐसी सामर्थ है जो मनुष्य के अंधकारमय जीवन में रोशनी ला सकता है। जरा सोचिये इस सुसमाचार को सामर्थी परमेश्वर ने दिया है। यह कोई मनुष्य द्वारा बनाई गई योजना नहीं है। (2 कुरि. 10:4)।

आज मसीह की कलीसिया तमाम संसार में इसी सुसमाचार को लोगों को बता रही है, क्योंकि इसी के द्वारा पापी मनुष्य का उद्धार होता है। हम लोगों को कोई समाज सेवा का सुसमाचार नहीं दे रहे, क्योंकि भौतिक वस्तुओं के द्वारा मनुष्य का उद्धार नहीं होता। हम वो सुसमाचार दे रहें हैं जिसके द्वारा हमारी आत्माओं का उद्धार होता है, और यह केवल सामर्थपूर्ण सुसमाचार के द्वारा संभव है।

आज मनुष्य की यह आवश्यकता है कि वह पाप से ग्रस्त अपनी आत्मा के विषय में सोचे। बाइबल कहती है कि मनुष्य जब इस संसार से चला जायेगा, तब एक दिन, न्याय का दिन होगा, तब सब परमेश्वर के न्याय आसन के सामने इकट्ठे होंगे, और सबको आपने कार्यो का लेखा-जोखा देना पड़ेगा। (2 कुरि. 5:10)।

क्या आपने इस सामर्थपूर्ण सुसमाचार के बारे में सुना है? यदि नहीं तो यह आवश्यक है कि आप इसके बारे में सुने, जाने, और इसकी आज्ञा को मानें। यह सामर्थपूर्ण सुसमाचार बताता है कि यीशु हमारे पापों के लिये क्रूस पर मारा गया, गाड़ा गया, और तीसरे दिन मृत्यु पर विजय पाकर जी उठा। यह एक बहुत बड़ी सामर्थपूर्ण बात है कि परमेश्वर की सामर्थ द्वारा प्रभु यीशु जी उठा। प्रभु यीशु हमारा ज़िन्दा प्रभु है। यदि आपने इस सुसमाचार को अभी तक नहीं माना है तो शीघ्र ही इसके विषय में सोचिये। आप प्रभु यीशु में विश्वास करके, पापों से अपना मन फिराकर और जल में बपतिस्मा ले। यीशु ने कहा था, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा।'' मरकुस 16:16)। क्या आप तैयार हैं? आज हमें किसी नये सुसमाचार की आवश्यकता नहीं है।

प्रेम का सुसमाचार

सनी डेविड

यदि आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व प्रभु यीशु अपने चेलों को यह आज्ञा देकर संसार में न भेजता कि, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" (मरकूस 16:15)। तो आज इस लेख के द्वारा मुझे आपके सामने आकर इन बातों को पेश करने की, जो मैं आपको बताने जा रहा हूं, कोई आवश्यकता न होती। क्योंकि इस लेख में यीशु मसीह के सुसमाचार के सिवाए हम आप को और कुछ नहीं बताना चाहते। क्योंकि हमारा विश्वास है, कि सबसे अधिक आपको यीशु मसीह के सुसमाचार की आवश्यकता है। हमें आपके मनोरंजन की नहीं परन्तु आपकी आत्मा की चिन्ता है। और आपकी आत्मा को नाश होने से केवल प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार ही बचा सकता है क्योंकि मसीह का सुसमाचार हर एक विश्वास लानेवाले के लिये उसके उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। (रोमियों 1:16)। मसीह यीशु के सुसमाचार के अतिरिक्त जगत में कोई ऐसा मनुष्य नहीं है, और कोई ऐसी ताकत नहीं है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने पापों से छूटकर धर्मी बन जाए। क्योंकि परमेश्वर धर्मी है। उसमें कोई अधर्म नहीं है, उसमें कोई पाप नहीं है। वह पवित्र और धर्मी है। और मनुष्य, यदि उसके स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है, तो अवश्य है कि वह धर्मी बने। परन्तु मनुष्य पापी हैं। वह स्वयं धर्मी कभी भी नहीं बन सकता। किन्तु जिस काम को मनुष्य नहीं कर सकता उसे परमेश्वर कर सकता हैं।

एक बार एक मनुष्य प्रभु यीशु के पास यह जानने के लिये आया था, कि अनन्त जीवन में प्रवेश करने के लिये मैं क्या करू? बाइबल का लेखक हमें बताता है, कि प्रभु ने उससे कहा, कि तू एक काम कर, कि जो कुछ तेरा हैं उसे तू बेचकर कंगालों को दे दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और तू आकर मेरे पीछें हो ले। परन्तु यह बात सुनकर वह मनुष्य बड़ा ही उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा ही धनी था, और अपने धन को किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहता था। इसलिये बिना कुछ कहे, वह यीशु के पास से चला गया। यीशु ने उसे जाते देखकर अपने चेलों से कहा, कि धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन हैं, "परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।" (मरकुस 10:25)। चेले प्रभु की बात सुनकर बड़े ही चकित होकर आपस में कहने लगे कि यदि ऐसा है तो फिर किसका उद्धार हो सकता है? किन्तु यीशु ने उनसे कहा, कि, "मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।" (मरकुस 10:27)।

मित्रों, मनुष्य पापी है। वह अपने आप को पवित्र नहीं बना सकता। वह अधर्मी है, और अपने आपको धर्मी नहीं बना सकता। परन्तु परमेश्वर उसे पवित्र बना

सकता, वह उसे धर्मी बना सकता है! और यही वास्तव में सुसमाचार है, एक खुश-ख़बरी है ! अर्थात् परमेश्वर ने मनुष्य को धर्मी बनाने के लिये अपने पुत्र यीशु ससीह को क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया। परमेश्वर ने उसे जगत के सारे पापों का प्रायश्चित ठहराकर क्रूस के ऊपर नाश कर दिया। उसने जगत के सारे लोगों के पापों को लेकर यीशु के ऊपर रख दिया, और प्रत्येक पापी के लिये उसे पाप ठहराया, और हर एक अधर्म के काम के लिये उसे क्रूस के ऊपर दन्डित किया ताकि उसके कारण हम उद्धार पाएं, और अनन्त विनाश के दन्ड से बच जाएं। मित्रों ये बात शायद आप में से कुछ लोगों को विचित्र सी लगे, परन्तु पवित्र बाइबल में इस प्रकार लिखा है, "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (1 कुरिन्थियों 1:18)।

मैं आपको आज बताना चाहता हूं, कि परमेश्वर की पुस्तक बाइबल यीशु के सम्बन्ध में कहती है, कि, "निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया, हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नई भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सबों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह 53:4-6)।

संसार का इतिहास इस बात का गवाह है कि आज से उन्नीस सौ साल पहिले पलस्तीन देश में रोमी और यहूदी लोगों ने एक निर्दोष मनुष्य को क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला था। उन्होंने उसे ताड़ना दी उसे कोड़ों से पीटा, और लकड़ी के एक क्रूस पर उसे कीलों से जड़कर आकाश और पृथ्वी के बीच में मरने के लिये लटका दिया। और बाइबल कहती हैं, कि ये सब कुछ परमेश्वर की इच्छा और उसके होनहार के ज्ञान से इसलिये हुआ ताकि उस पर मार पड़ने से हमारे पापों का प्रायश्वित हो जाए। मित्रों, यह परमेश्वर के प्रम का सुसमाचार है! वह चाहता है, कि उसके सुसमाचार के द्वारा सारे जगत के लोग जानें कि वह जगत में प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करता है, और उसका प्रेम क्रूस के ऊपर प्रगट हुआ है। जहां उसने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने ही एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया। जो दोष हमारा था उसके बदले में हमें दन्ड देने के विपरीत उसने अपने ही पुत्र को हमारा दन्ड दिया, क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है। बाइबल में लिखा है कि, "किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।'' (रोमियों 5:7,8)। हां, मसीह हमारे लिये मरा। और वह मरा ताकि वह हमें पाप से छुटकारा दिला दे। अपने पुत्र यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर हमें धर्मी बनाना

चाहता है, ताकि उसमें होकर हम धर्मी बन जाएं, और उसके स्वर्ग के भीतर प्रवेश पाने के योग्य बन जाए।

इसलिये बाइबल में हम एक जगह यों पढ़ते हैं, और मैं निवेदन करता हूं कि आप बड़े ही ध्यान से इसको देखें, लिखा है : "सौ यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया ...... अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया ...... किन्तु "जो पाप से अज्ञात था उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (2 कुरिन्थियों 5: 17-19, 21)।

मित्रों, आपके लिये यह परमेश्वर के प्रम का सुसमाचार है, यही वह सुसमाचार है जिसका प्रचार प्रभु यीशु ने सारे जगत में करने की आज्ञा दी थी। अर्थात् मनुष्य को बचाने के लिये परमेश्वर स्वयं मसीह में होकर ज़मीन पर उतर आया। वह मनुष्य का उद्धार करने के लिये इन्सान बना। और यद्यपि वह पाप से अज्ञात था तौभी वह आपके और मेरे लिये पाप बना। ताकि हम उसमें होकर, उसके बलिदान के द्वारा, परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। इसलिये, परमेश्वर का वचन कहता है कि अब जो मनुष्य मसीह में है वह एक नई सृष्टि है, एक नया इन्सान है। क्योंकि परमेश्वर जानता है कि उस मनुष्य के पापों का प्रायश्चित उसके पुत्र के बलिदान के द्वारा हो चुका है। अब वह पुराना मनुष्य नहीं है जिसके भीतर पाप और अधर्म वास करते थे, परन्तु उसने उस पुराने इन्सान को मसीह में विश्वास लाकर और अपना मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर उतार फेंका है। बाइबल में लिखा हैं, ''कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। सो उस मृत्यु का बपुतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी सृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी उसके साथ जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में ने रहें।" (रोमियों 6:3-6)।

क्या आप मसीह में हैं? यदि नहीं, तो परमेश्वर आप को यह सुसमाचार देता हैं, कि आप उसके पुत्र में विश्वास लाकर, और पाप से अपना मन फिराकर, और उसका बपतिस्मा लेकर एक नई सृष्टि बन सकते हैं। परमेश्वर आपको प्रेम करता है। वह आपको बचाना चाहता है। सो देरी न करें। जीवन छोटा है, परन्तु अनन्तकाल बहुत बड़ा है, और परमेश्वर की इच्छा है कि आप हमेशा उसके साथ रहें।

शमौन जादूगर को पवित्र आत्मा की सामर्थ देने से मना क्यों किया गया था?

जे. सी. चोट

पहली सदी में सुसमाचार के प्रसार के विवरण में, आगे हम पढ़ते हैं कि फिलिप्पुस सामरिया में वहां के लोगों में मसीह का प्रचार करने के लिए गया। पर आप को कहानी का सार बताने के बजाय, मैं चाहूंगा कि हम वचन में से देखें कि वहां हुआ क्या था। लिखा है, "जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिह्न वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गई, और बहुत से लकवे के रोगी और लंगड़े भी अच्छे किए गए; और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया।

इस से पहले उस नगर में शमौन नामक एक मनुष्य था, जो जादू-टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को एक बड़ा पुरुष बताता था। छोटे से बड़े तक सब उसका सम्मान कर कहते थे, "यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान् कहलाती है। उस ने बहुत दिनों से उन्हें अपने जादू के कामों से चकित कर रखा था, इसी लिये वे उसको बहुत मानते थे। परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री, बपतिस्मा लेने लगे। तब शमौन ने स्वयं भी विश्वास किया और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा। वह चिह्न और बड़े-बड़े सामर्थ्य के काम होते देखकर चकित होता था।

जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे, सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था; उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।

जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता हैं, तो उनके पास रुपये लाकर कहा, "यह अधिकार मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पाए।''

पतरस ने उस से कहा, "तेरे रुपये तेरे साथ नष्ट हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया। इस बात में न तेरा हिस्सा है, न भाग; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं। इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए। क्योंकि मैं देखता हूं कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है।''

शमौन ने उत्तर दिया, "तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं, उनमें से कोई मुझ पर न आ पड़े। अतः वे गवाही देकर और प्रभु का वचन सुनाकर यरूशलेम को लौट गए, और सामरियों के बहुत से गांवों में सुसमाचार सुनाते गए" (प्रेरितों 8:6-25)।

फिलिप्पुस उन सात लोगों में से एक था जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके, और यह वही प्रचारक था जो सामरिया के लोगों के बीच मसीह का प्रचार करने के लिए गया था। सामरिया में प्रचार करने के अलावा उसने कई आश्चर्यकर्म यह दिखाने के लिए किए थे कि वह सचमुच में परमेश्वर का संदेश ही बता रहा था, जिसमें उसने दुष्टात्माओं को भी निकाला तथा ऐसे-ऐसे और काम किए।

इस सब से हमें बताया गया है कि बहुत से लोगों ने परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम से फिलिप्पुस के प्रचार पर विश्वास किया और क्या पुरुष और क्या स्त्री सब ने बपतिस्मा लिया।

यह खुशखबरी यरूशलेम में पहुंच गई जहां प्रेरित ठहरे हुए थे। उन्होंने इस बात को समझा कि इन नये मसीहियों की सहायता करनी चाहिए, जो यरूशलेम की कलीसिया से दूर थे, और उनके आत्मिक जीवन में अगुआई के लिए कोई लिखित वचन नहीं था। पतरस और यूहन्ना उनके लिए प्रार्थना करने और उन पर हाथ रखने के लिए सामरिया में गए ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके। फिर आत्मा की प्रेरणा के द्वारा जिन्हें "भविष्यवाणी" (यूनानी शब्द के अनुसार, "परमेश्वर का संदेश सुनाना जिसे किसी अन्य ढंग से जाना नहीं जा सकता, भूतकाल से सम्बन्धित हो या भविष्य या वर्तमान से") का दान मिलना था, उन्हें मसीही लोगों की उन्नति, उपदेश और शांति के लिए चमत्कारी ढंग से योग्य बनाया जाना था (1 कुरिन्थियों 14:3)।

अब सवाल है कि फिलिप्पुस ने इन नये विश्वासियों को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति क्यों नहीं दी? इस दान को देने के लिए यरूशलेम से दो प्रेरितों को चलकर सामरिया में क्यों आना पड़ा? इस हवाले से हमें साफ पता चलता है कि **आत्मा का बपतिस्मा पाए हुए लोग ही दूसरों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दे सकते थे।** फिलिप्पुस ने क्यों नहीं दी? क्योंकि वह नहीं दे सकता था! वह प्रेरित जो नहीं था!

सामरिया में वापस चलते हैं। एक और आदमी वहां था, जिसका बड़ा नाम था। वह शमौन टोना था जो वहां का स्थानीय जादूगर था। उसने बहुत से लोगों को ठगा था जिन्हें यह लगता था कि उसके पास कोई बड़ी शक्ति है। शमौन एक जादूगर था, और उसे मालूम था कि जो कुछ वह कर रहा है वह केवल हाथ की सफाई है। उसके उलट जब उसने असली चमत्कार देखे तो उसने मान लिया कि वे वास्तविक हैं, और उस सुसमाचार को सुन कर जिसकी पुष्टि, आश्चर्यकर्मों के द्वारा हो चुकी थी, उसने भी परमेश्वर की आज्ञा माननी चाही।

प्रेरितों ने आकर बपतिस्मा पाए हुए कुछ विश्वासियों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी, पर बपतिस्मा पाए हुए सब विश्वासियों को यह सामर्थ नहीं दी गई थी। शमौन

उन लोगों में से था जिन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ नहीं मिली थी, पर उसने जो हुआ था वह सब देखा था। यह विनती करने के बजाय कि उसे भी असली चमत्कार करने का दान दिया जाए उसने प्रेरितों से कहा कि उसे भी यह सामर्थ दी जाए कि वह दूसरों को चमत्कार करने की शक्ति देने के लिए उनके ऊपर हाथ रख सके।

ये आत्मा के दो बिल्कुल अलग-अलग नाप थे क्योंकि प्रेरितों को परमेश्वर द्वारा पवित्र आत्मा के बहाए जाने के द्वारा बपतिस्मा दिया गया था। जिससे न केवल वे हर प्रकार के आश्चर्यकर्म कर सकते थे बल्कि दूसरों को भी आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दे सकते थे। परन्तु जिन्हें प्रेरितों द्वारा हाथ रखने का नाप मिला था वे केवल कुछ खास आश्चर्यकर्म ही कर सकते थे। आगे के विवरण के अनुसार जो 1 कुरिन्थियों 12 में दिया गया है कि अलग-अलग लोगों को अलग-अलग दान दिए जाते थे; कुछ लोग अन्य भाषाओं में बोल सकते थे, कुछ भविष्यवाणी कर सकते थे, कुछ आश्चर्यकर्म के द्वारा चंगाई दे सकते थे। इस प्रकार से पूरी कलीसिया को तैयार किया गया था, परन्तु मसीही लोग एक-दूसरे पर निर्भर भी थे जिन्हें एक-दूसरे के दानों की आवश्यकता पड़ती थी।

"वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है; और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है; और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। किन्तु सबको लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं, और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। किसी को उसी आत्मा से विश्वास, और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति, और किसी को भविष्यवाणी की, और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है" (1 कुरिन्थियों 12:4-11)।

शमौन चाहता था कि उसे दूसरों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देने की योग्यता मिल जाए, जिसके लिए उसने प्रेरितों को पैसा देने की पेशकश की। वह पहले भी लोगों से हेराफेरी करता और घूस देता होगा जिस कारण इस नई परिस्थिति में भी उसने वैसा ही करने का प्रयास किया। टोने या जादू के अपने करतबों के द्वारा वह लोगों की नजरों में बड़ा आदमी बन गया था, जिस कारण उसे लगा होगा कि यदि उसे पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल जाए तो वह चमत्कार करने वाले बहुत से अनुयायी बना लेगा जिससे वह सचमुच में एक बड़ा आदमी बन सकता है।

संक्षेप में, यही कारण है कि दूसरों को आगे दान देने की सामर्थ केवल प्रेरितों को दी गई थी। यदि औरों को दी गई होती तो कुछ लोगों ने जिन्हें इसका महत्व भी पता नहीं होना था, घूस लेने या अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को यह सामर्थ देने के लोभ में पड़ जाना था। बेशक मनुष्य परमेश्वर को आज्ञा नहीं दे सकता या उसे धोखा नहीं दे सकता, इसीलिए इस प्रकार की बुराई की अनुमति नहीं हुई होगी।

घूस देने की शमौन की कोशिश सफल नहीं हुई। पतरस ने उसे केवल इतना कहते

हुए उत्तर दिया "तेरे रुपये तेरे साथ नष्ट हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया" (प्रेरितों 8:20)। प्रेरित पतरस ने उसे अच्छी तरह से समझा दिया कि परमेश्वर के दान को पैसे से खरीदा नहीं जा सकता। उसने उसे डांटा और बताया कि उसका मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं है और यह भी कहा कि वह इस बुराई से अपना मन फिराए, और परमेश्वर से प्रार्थना करे जिससे उसे क्षमा मिल सके। पतरस ने निष्कर्ष निकाला, "क्योंकि मैं देखता हूं कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है" (प्रेरितों 8:23)। अन्य शब्दों में, शमौन बहुत नीचे गिर गया था। वह सरासर गलत था।

पतरस शमौन से यह बात इसलिए कह पाया क्योंकि उस ने सुसमाचार को सुनकर उसे माना था यानि वह एक मसीही था और कलीसिया का सदस्य था, और उसने पाप किया था पर उसके लिए फिर से सुसमाचार की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं थी। परमेश्वर की संतान बन जाने के कारण मन फिराकर परमेश्वर से प्रार्थना करना आवश्यक था जिससे उसे क्षमा मिल जाती। शमौन ने पतरस की बात को सुनकर बुरा नहीं माना बल्कि उसने कहा, "तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं, उनमें से कोई मुझ पर न आ पड़े" (प्रेरितों 8:24)

इसके बाद पतरस और यूहन्ना यरूशलेम में लौट गए तथा फिलिप्पुस कहीं और चला गया। परन्तु शमौन का क्या हुआ? हम यह मान लेंगे कि पतरस ने उसे समझाया था और उससे कहा था वह मन फिराए और क्षमा मांगने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करे और उसने ऐसा ही किया होगा और वह एक अच्छा मसीही बनकर रहने लगा होगा।

क्या इसका अर्थ यह है कि इसके बाद प्रेरितों ने शमौन पर हाथ रखे ताकि उसे आश्चयकर्म करने की सामर्थ मिल सके? नहीं, ऐसा कोई संकेत नहीं है, और इसके तीन कारण हैं:

* जब यरूशलेम में प्रेरितों ने सात पुरुषों के ऊपर हाथ रखे थे, और दूसरों के ऊपर नहीं रखे थे, तब हम देखते हैं कि सामरिया में बपतिस्मा लेने वाले हर व्यक्ति को चमत्कारी शक्ति नहीं दीं गई थी।

* जहां तक शमौन की बात है, वह अपने जादू के दम पर "चमत्कारों'' के कारण काफी प्रसिद्ध था। यह डर होगा कि लोगों को यह सुनकर कि मसीही बन जाने के बाद अब वह क्या कर रहा है यह लग सकता था कि वह सामर्थ शमौन की अपनी ही होगी या जादू के काम करते हुए जिसका वह दावा किया करता था उसी की होगी। देखने सुनने वालों को यही लगता कि कलीसिया में भी आज ऐसा ही होता है।

* पवित्र आत्मा की चमत्कारी शक्ति पाने से उसने उस सामर्थ का दुरुपयोग करने की बड़ी परीक्षा में पड़ जाना था। जैसा कि किसी ने कहा है, "अपने पाप से मन फिराकर क्षमा मांग लेने पर किसी को बैंक में डकैती डालने के लिए क्षमा तो किया जा सकता है, परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि आप उसे अब बैंक में कैशियर की नौकरी दे दें; यानी उसे गल्ले की रखवाली का काम नहीं सौंपा जा सकता।"

पवित्र आत्मा के हाथ रखने के नाप को पाने का उद्धार से कोई सम्बन्ध नहीं था,

परन्तु प्रभु के कुछ लोगों को इन दानों को दिए जाने के लिए चुना गया था ताकि उस समय में वे प्रभु के काम के लिए अपनी बेहतर सेवा दे सकें। आज हमें ऐसी चमत्कारी बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम पर परमेश्वर की इच्छा को प्रगट करने और खोए हुए संसार में इसे पहुंचाने, और सारी मनुष्यजाति में ले जाने के लिए हमारे पास नया नियम है।

क्या स्त्री मण्डली में अन्य भाषा बोल सकती है?

आज संसार की सबसे तेजी से बढ़ने वाली धार्मिक लहरों में से एक "पैंटिकॉस्टल" चर्च है। इस श्रेणी में द असैम्बलीज ऑफ गॉड, द चर्च ऑफ गॉड, द पैंटिकॉस्टल चर्च आदि जैसी बहुत सी कलीसियाएं आ जाती हैं। मुख्या-धारा के चर्चों की कई कलीसियाओं ने भी पवित्र आत्मा के बपतिस्मे, चमत्कारों, "बोलियां" बोलने, और आश्चर्यजनक ढंगों से पवित्र आत्मा के काम करने के अन्य दावों जैसी "पैंटिकॉस्टल" शिक्षाओं को अपना लिया है।

ये कलीसियाएं "पवित्र आत्मा," "पैंटिकॉस्ट," "चर्च ऑफ गॉड" आदि जैसे बाइबल के शब्दों पर जोर देती हैं जिस कारण अधिकतर लोग उनके इतिहास, शिक्षा, और परमेश्वर के वचन की तुलना में किए जाने वाले उनके कामों पर ध्यान दिए बिना, वचन के अनुसार कलीसियाएं होने के उनके दावों को, सही मान लेते हैं।

यह सच है *कि जब हम नये नियम को पढ़ते हैं तो वहां पता चलता है कि यीशु के स्वर्ग पर उठा लिए जाने के लगभग एक सप्ताह बाद पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उतरने से मसीह की कलीसिया का आरम्भ हुआ था। सो इन समूहों की भाषा में इन नामों को लेकर अपने लिए इस्तेमाल कर लिया जाता है; जिस कारण वे लोग, जो हो सकता है कि सच्चाई की खोज बड़ी गम्भीरता से कर रहे हों, बड़ी कशमकश में पड़ जाते हैं।*

परन्तु समस्या यह है कि इन कलीसियाओं को मसीह ने पहली सदी में स्थापित नहीं किया था। "द असैम्बलीज ऑफ गॉड" को कई प्रचारकों तथा पूर्व मिशनरियों द्वारा 1914 में अमेरिका हॉट स्प्रिंग्ज, आरकैंसा में संगठित किया गया था। "द चर्च ऑफ गॉड" जो मूलतया "द होलिनैस चर्च" हुआ करता था, का आरम्भ रिचर्ड जी. स्पलिंग द्वारा 1902 में मोनरो काउंटी, टैनिसी में हुआ था। 1943 में टॉमलिंसन बंधुओं ने जिन्हें इसका नेतृत्व अपने पिता से विरासत में मिला था, इसे दो शाखाओं में बांट दिया। दोनों शाखाओं के मुख्यालय, क्लीवलैंड, टैनिसी में हैं। "द पैंटिकॉस्टल होलिनैस चर्च" एंडर्सन, साऊथ कैरोलाइना में 1858 में बना था। आज दुनिया भर में सैकड़ों पैंटिकॉस्टल टाईप की कलीसियाएं हैं, जिनमें से कुछ तो संगठित हैं और कुछ स्वतन्त्र रूप में कार्य कर रही हैं। परन्तु इनमें से किसी भी गुट का आरम्भ पहली सदी में नहीं हुआ था। जिसका अर्थ है कि वे, वह मूल कलीसिया नहीं हो सकतीं, जिसका आरम्भ यीशु ने किया था।

कलीसिया का जन्मदिन चाहे पिन्तुकुस्त वाला दिन था, परन्तु परमेश्वर का अपने परिवार को उस नाम से पुकारकर, उस यहूदी पर्व के दिन को महिमा देने का कोई इरादा नहीं था। इफिसियों 3:14, 15 हमें बताता है कि हमें "उस पिता के सामने घुटने" टेकने आवश्यक हैं,

"जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है।" प्रेरितों 4:12 कहता है कि "स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में [मसीह के नाम के सिवाय] और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" रोम की कलीसिया को पौलुस ने लिखा कि हम मसीह के साथ ब्याहे गए हैं (रोमियों 7:4) और रोमियों 16:16 में उसने कहा कि "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" इफिसियों 5:23-32 पति और उसकी पत्नी के बीच तथा मसीह और कलीसिया के बीच पाई जाने वाली एक सुन्दर समानता को दिखाता है।

इन आयतों से साफ पता चलता है कि पूर्ण रूप में कलीसिया और निजी तौर पर मसीही लोगों के लिए दूल्हे का यानी मसीह का नाम अपनाना आवश्यक है। वचन में कहीं पर भी कलीसिया को "पैंटिकॉस्टल" कहकर यहूदी पर्व को महिमा नहीं दी गई है। लोगों ने ऐसा करके बड़ी गम्भीर गलती की है, परन्तु फिर भी वे "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा" पाए होने का दावा करते हैं। यदि पवित्र आत्मा उनके साथ उसी प्रकार से कार्य कर रहा होता जैसे प्रेरितों के साथ काम करता था, तो उसने जो कुछ पहले से नये नियम में लिख दिया था, उससे हटकर, उन्हें ऐसी अन्य और गम्भीर गलतियां नहीं करने देनी थीं।

ये लोग पवित्र आत्मा के चमत्कारी कार्य पर इस प्रकार से जोर देते हैं जैसे परमेश्वरत्व में वही प्रमुख हो, और जैसे चमत्कार करना और शारीरिक चंगाई देना ही परमेश्वर की बड़ी चिंता हो।

जब कोई खुली आंखों से नये नियम को ध्यान से पढ़ता है तो उसे पता चलता है कि नया नियम पूरा होने से पहले, पवित्र आत्मा नये नियम को लिखने और उस समय सुनाए गए वचन को दृढ़ करने के लिए, प्रेरणा देने के लिए दिया गया था। परन्तु तब भी वह अपना नहीं बल्कि "मसीह का प्रचार" करने की प्रेरणा देता था, और शारीरिक चंगाई केवल संदेश देने वाले की बात को पक्का करने के लिए कभी कभार हो जाती थी, क्योंकि चमत्कार करना कभी भी प्रचार करने का उद्देश्य नहीं होता था।

पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने यीशु का प्रचार किया (प्रेरितों 2), फिलिप्पुस सामरिया में यीशु और परमेश्वर के राज्य की बातें सुनाने गया (प्रेरितों 8:12), उसने खोजे को यीशु के विषय में बताया (प्रेरितों 8:35) और पौलुस अपने मनपरिवर्तन के तुरन्त बाद मसीह का प्रचार करने लगा था (प्रेरितों 9:20)। *वचन* में कहीं पर भी प्रचारकों ने पवित्र आत्मा के विषय पर प्रचार नहीं किया, जैसा कि आज पैंटिकॉस्टल प्रचारक करते हैं।

इसके अलावा, सुसमाचार के विवरणों के बाद, केवल प्रेरितों के काम की पुस्तक में ही आश्चर्यकर्मों के निजी मामलों की बात मिलती है। प्रेरितों के काम में वापस जाकर वचन में आश्चर्यकर्मों की प्रत्येक घटना को चिन्हित करना आंखें खोल देने वाला होगा। बहुत से पाठक आज कलीसियाओं में इस विषय तथा "चमत्कार" होने पर दिए जाने वाले अत्यधिक बल से यह देखकर चकित रह जाएंगे कि उस विवरण में उन पर कितना कम जोर दिया गया है, और किस प्रकार केवल कुछ मामलों का उल्लेख है। पत्रियों में ही केवल 2 कुरिन्थियों, गलातियों और इब्रानियों में आश्चर्यकर्मों का उल्लेख है। क्यों भला? क्योंकि नये नियम की पुस्तकें पूरी हो जाने से आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता कम होती जा रही थी। जैसा कि मरकुस 16:20 में मिलता है, वचन के लिखा जाने और साथ-साथ होने वाले चिन्हों के द्वारा इसकी पुष्टि किए जाने के बाद आश्चर्यकर्मों का युग समाप्त होने जा रहा था।

वचन के किंग जेम्स वाले अनुवाद में "बोलियों" के उल्लेख के कारण 1 कुरिन्थियों 14

अध्याय पैंटिकॉस्टल लोगों का पसन्दीदा हवाला है। उन्होंने इन "बोलियों" का अर्थ स्वर्गीय भाषा निकाल लिया है, जिसे केवल परमेश्वर ही समझ सकता है। जिस कारण वे पवित्र आत्मा की चमत्कारी शक्ति के द्वारा आज बोलियां बोलने का दावा करते हैं। क्या यह सच है? पूरे हवाले को ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि उनकी शिक्षाएं और व्यवहार दी जाने वाली स्पष्ट शिक्षाओं के बिल्कुल उलट है।

1. आयत 40 से आरम्भ करके पीछे को देखने पर, हमें पता चलता है कि पवित्र आत्मा प्रेरित पौलुस से *"सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से"* किए जाने को कह रहा था। पैंटिकॉस्टल सभाएं, तालियां बजाने, शोरगुल मचाने, और बीच-बीच में कइयों के जोश में आने के लिए प्रसिद्ध हैं जो कोई बात कहने या बोलियां बोलने के लिए अचानक पवित्र आत्मा से "भर जाने" का दावा करते हैं। पवित्र आत्मा ने लोगों को आज सीधे-सीधे उसका विरोध करने के लिए, जो उसने 1 कुरिन्थियों 14:40 में लिखा था, नहीं उकसाना था।

2. बोलियां बोलने और भविष्यद्वाणी करने की बात करती आयतों के बीच में देखें, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से आज्ञा दी गई है, *"स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है: जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है"* (1 कुरिन्थियों 14:34, 35)।

पैंटिकॉस्टल समूह अपनी बहुत सी महिला प्रचारकों के लिए प्रसिद्ध हैं, और इस बात के लिए कि उनकी सभाओं में पुरूषों से कहीं अधिक उनकी महिलाएं "बोलियां बोलती" हैं। वे पवित्र आत्मा की सामर्थ से बल्कि उसके नियन्त्रण में बोलने का दावा करते हैं, जैसे उनका अपने व्यवहार पर कोई काबू नहीं होता। परन्तु आयत 32 साफ कहती है कि पवित्र आत्मा किसी को उसकी इच्छा के विरूद्ध नहीं बुलवाएगा। सो ये लोग बोलते हैं क्योंकि वे बोलना चुनते हैं, और जो वे बोलते या करते हैं, वह पवित्र आत्मा के द्वारा लिखित इन स्पष्ट शब्दों का सीधा उल्लंघन है। इसी तथ्य से हम यह जान सकते हैं कि पवित्र आत्मा उन्हें बोलने के लिए उकसाता नहीं है।

3. आयत 33 कहती है कि परमेश्वर *"गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है।"* आयतें 29-39 में बताया गया है कि जो लोग भविष्यद्वाणी करते (यानी वचन सुनाते या सिखाते) हैं, वे बारी बारी से बोलें ताकि गड़बड़ी न हो। विभिन्न लोगों के उछलने, आत्मा का प्रकाशन होने का दावा करने, बोलियां बोलते हुए जोश में आकर दूसरों को रोकने, जैसा कि पैंटिकॉस्टल कलीसियाओं में आम होता है, के विचार को इन आयतों में जिनकी स्वयं पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा दी गई थी, मनाही की गई है।

4. आयतें 9, 10, 11 में इन "बोलियों" को स्पष्ट रूप में मनुष्यों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएं बताती हैं। आयत 9 में पौलुस पूछता है, *"ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ-साफ बातें न कहो, तो जो कुछ कहा जाता है वह कैसे समझा जाएगा? तुम तो हवा से बातें करने वाले ठहरोगे!"* यही प्रश्न उसने आज "बोलियां" बोलने का दावा करने वालों से पूछना था।

5. आयत 10 साफ़ कहती है कि *"जगत में कितने ही प्रकार की भाषाएं" हैं* (ध्यान दें कि वह "स्वर्गीय भाषा" की बात नहीं कर रहा) और *"उनमें से कोई भी बिना अर्थ की नहीं है।"*

6. आयत 11 कहती है कि यदि पौलुस को बोलने वाली किसी भाषा का अर्थ पता न हो तो उसका बोलने वाले के लिए परदेशी होना था और बोलने वाला उसके लिए परदेशी होना था। विभिन्न मानवीय भाषाओं और सुनने वालों के लिए बाहरी भाषा में बोलने के प्रश्न के विषय की बात होने पर ये सभी बातें बिल्कुल समझ में आती हैं।

7. पौलुस का निष्कर्ष था कि (आयत 12) उनमें कलीसिया की उन्नति की धुन होनी चाहिए; और आयत 19 में उसने कहा कि वह समझ में न आ सकने वाले दस हजार शब्द बोलने के बजाय, अपने सुनने वालों को समझ में आ सकने वाले पांच शब्द बोलना पसंद करेगा। पवित्र आत्मा ने यदि उस समय पौलुस को ऐसी बातें लिखने को कह दिया, तो किसी को कैसे लग सकता है कि आज ऐसी "बोलियां" जिनका किसी के लिए भी कोई अर्थ नहीं है, बोलने के उकसाने वाला पौलुस ही है और इससे गड़बड़ी छोड़ और कुछ नहीं मिलता? यह सब इस अध्याय का सीधा सीधा उलंघन है। 1 कुरिन्थियों 14 में पौलुस के सामने वास्तविक परिस्थिति क्या थी?

प्रेरितों के काम 2 अध्याय में वापस जाने पर हमें पता चलता है कि प्रेरितों 1:5 में यीशु की प्रतिज्ञा के अनुसार, प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया। आत्मा के इस बपतिस्मे से वे हर प्रकार के आश्चर्यकर्म करने के योग्य बन गए। यानी उन्हें चमत्कारी ज्ञान, बुद्धि, परख, अनेक प्रकार की भाषाएं बोलने की, जिन्हें उन्होंने सीखा नहीं था, बीमारों को चंगा करने की शक्ति, दुष्ट आत्माओं को निकालने की शक्ति, और यहां तक कि मुर्दों को जिलाने की शक्ति दी गई। प्रेरितों 5:16 कहता है कि प्रेरितों के पास लाए गए हर व्यक्ति को चंगा किया जाता था। उनके साथ ऐसा कभी नहीं हुआ कि उन्हें किसी को चंगाई न दे पाने पर यह बहाना बनाना पड़े कि बीमार व्यक्ति का विश्वास नहीं था, जैसा कि आज के कथित "विश्वास से चंगाई देने वाले" कहते हैं। प्रेरितों के आश्चर्यकर्म तात्कालिक और पूर्ण होते थे, न कि बीमार व्यक्ति के "किस्तों में चंगा" होने के, जैसा कि आज दावा किया जाता है।

प्रेरितों 5:32 चाहे साफ कहता है कि परमेश्वर अपने सब आज्ञा मानने वालों को पवित्र आत्मा देता था, परन्तु तब तक आश्चर्यकर्म केवल प्रेरित ही कर सकते थे! कई हजार लोगों ने बपतिस्मा लिया था और वे मसीही बने थे, परन्तु आयत 12 बताती हे कि *"प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों में दिखाए जाते थे।"*

प्रेरितों को छोड़ और कोई भी तब तक आश्चर्यकर्म नहीं कर सकता था जब तक प्रेरितों ने कुछ मसीही लोगों को चुना नहीं (जो पहले से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे; प्रेरितों 6:3) और उन्हें विशेष रूप में व्यक्तिगत दान देते हुए उनके ऊपर हाथ नहीं रखे। ये लोग वे सब काम कर सकते थे जिन्हें प्रेरित कर सकते थे, परन्तु एक व्यक्ति को कोई विशेष भाषा बोलने की शक्ति, किसी दूसरे को किसी दूसरी भाषा में बोलने की शक्ति, किसी और को बीमारों को चंगाई देने की शक्ति, किसी अन्य को चमत्कारी ज्ञान, किसी को मण्डलियों में अलग अलग भाषाएं बोलने वाले लोग होने के कारण भाषा का अर्थ बताने की शक्ति, किसी और को भविष्यद्वाणी का दान आदि मिलता था।

1 कुरिन्थियों 12:8-10 में साफ़ बताया गया है कि एक मसीही को एक दान, किसी दूसरे मसीही को कोई और दान दिया जाता था ताकि वे नया नियम लिखे जाने से पहले के उस समय की अपनी आत्मिक उन्नति के लिये एक-दूसरे के ऊपर निर्भर हों, कुछ मामलों में ऐसे अर्थ

बताने वालों की आवश्यकता थी। (ऐसा कोई मामला नहीं मिलता जहां प्रेरित को अनुवादक की आवश्यकता हो, जो इस बात का प्रमाण है कि जहां भी वे जाते थे वहां की भाषा बोलने में पवित्र आत्मा उन्हें सक्षम बना देता था), यह स्पष्ट है कि किसी मसीही के जो अपने जन्म के स्थान पर न रह रहा हो, चमत्कारी ढंग से स्थानीय भाषा का ज्ञान दिया जा सकता है। परन्तु यदि वह किसी और जगह जाता है जहां कोई और भाषा बोली जाती हो, तो वहां "उस पर हाथ रखकर" उसे उस इलाके की भाषा देने के लिए नहीं, परन्तु ऐसी स्थिति में चमत्कारी दान जो पहले से उसके पास था तब भी उपयोगी था। यदि उस मण्डली के किसी के पास अर्थ बताने का चमत्कारी दान हो, ताकि उसकी अब "बाहरी" भाषा का अनुवाद स्थानीय लोगों की भाषा में हो सके।

कहने का मतलब यह है कि हमें यह समझना आवश्यक है कि वचन साफ बताता है कि जब किसी व्यक्ति को "बोलियां" बोलने का दान दिया जाता था तो इसका अर्थ यह होता था कि किसी एक भाषा का ज्ञान चमत्कारी ढंग से दिया गया था। जो कि साफ है कि दान दिए जाने के समय उसे उसकी आवश्यकता थी। उसे सब बातों का ज्ञान नहीं दिया जाता था। न ही ऐसा है कि वह जहां जहां जाता हो वहां की भाषा अपने आप बोलने लगता हो। यदि ऐसा होता तो अनुवाद करने की आवश्यकता न होती। परन्तु सताव के बाद और मसीही लोगों के एक से दूसरी जगह बदलते रहने के कारण भाषा का ज्ञान और भाषा का अर्थ बताना दोनों आवश्यक थे। इस संदर्भ में पौलुस ने चमत्कारी "बोलियां" के उपयोग की कई बातें बताई:

ऐसी भाषा बोलने वाले जिसकी समझ स्थानीय मसीही लोगों को न हो, जानते थे कि उनका दान परमेश्वर की ओर से है और परमेश्वर इस बात को समझता था कि वे क्या कह रहे हैं, (और आज के "बोलियां" बोलने के विपरीत जब बोलने वाले को ही पता नहीं होता कि वह क्या कह रहा है, आयत 4 में पौलुस ने कहा कि उस समय का बोलने वाला अपनी उन्नति करता था यानी उसे मालूम होता था कि वह क्या कह रहा है), परन्तु सुनने वालों के लिए इसका कोई वास्तविक लाभ तब तक नहीं होता था जब तक कोई उन्हें उसका अर्थ न समझाए (1 कुरिन्थियों 14:2)।

सच्चाई की उसकी अपनी समझ जिसे वह समझा रहा था सुनने वालों की समझ से बाहर थी, सो सुनने वालों के मनों पर इसका कोई फल नहीं आ सकता था (आयत 14)।

उन्हें तब तक "बोलियां" बोलने से मना किया गया जब तक कोई उसका अर्थ बताने वाला न हो (आयत 28), क्योंकि "बोलियां" बोलना यदि सुनने वालों के द्वारा समझा नहीं जाता तो मण्डली में आने वाले अविश्वासियों को यही लगता था कि वे पागल हैं (आयत 23)।

इसके बजाय उन्हें भविष्यद्वाणी के दान यानी प्रचार करने के दान की इच्छा करने को कहा गया क्योंकि इससे सुनने वालों की उन्नति, ताड़ना, और शांति होनी थी। यह वह संदेश था जो सब सुनने वालों को समझ आ सकता था। किसी भी बोलने वाले का प्रमुख उद्ददेश्य अपने सुनने वालों की उन्नति होती है न कि यह कि लोग उसके अभिनय को सराहें (आयतें 1, 5)।

इन आयतों के विश्लेषण से हम देख सकते हैं कि आज के कथित पैंटिकॉस्टल लोगों द्वारा जो भी किया जाता है वह वास्तव में 1 कुरिन्थियों 14 में पौलुस द्वारा बताई गई बातों से बिल्कुल अलग है। वास्तव में कई बातों पर आज की जानने वाली बातें पवित्र आत्मा की अगुआई के द्वारा पौलुस के दिये गये निर्देशों का बिल्कुल उलंघन है। हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा पवित्र

शास्त्र में एक बात कहकर आज उसके विपरीत कोई बात नहीं कहेगा, जो लोग आत्मा की सामर्थ से ऐसी बातें करने का दावा करते हैं वे झूठे दावे कर रहे हैं। निश्चय ही उनकी नियत साफ है परन्तु वे पवित्र शास्त्र से अनजान हैं और भ्रमित हैं। नहीं आज कलीसिया की सभा में स्त्रियां "बोलियां" नहीं बोल सकती। वास्तव में इसकी कभी अनुमति नहीं थी, प्रेरितों के युग में भी नहीं जब भाषाओं का दान सचमुच में होता था।

बाइबल के बपतिस्मे की ओर वापस

चार्ल्स बाक्स

बाइबल में बपतिस्मे का महत्व बता दिया गया है। "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल" (प्रेरितों के काम 22:16)। बपतिस्मा पानी में दफ़नाए जाना है ताकि हम मसीह और उसकी कलीसिया में आ सके। "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:27)। आइए बपतिस्मे के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार करें।

क्या बपतिस्मा सचमुच में आवश्यक है? बपतिस्मा बहुत आवश्यक है और बहुत बार गलत समझा जाने वाला विषय है। बपतिस्मा आवश्यक है क्योंकि इसकी आज्ञा मसीह ने दी है। "और उसने उनसे कहा, 'तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा' " (मरकुस 16:15-16)। बपतिस्मा यीशु के अधिकार से पापों की क्षमा के लिए दिया जाना आवश्यक है। "पतरस ने उनसे कहा, 'मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे' " (प्रेरितों के काम 2:38)।

यीशु की मृत्यु के समय उसका लहू बहा था। "परन्तु सैनिकों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा, और उसमें से तुरन्त लहू और पानी निकला" (यूहन्ना 19:34)। बपतिस्मा आवश्यक है क्योंकि यह यीशु की मृत्यु और उसके लहू के सम्पर्क में हमें लाता है। "क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें" (रोमियों 6:3-4)।

बपतिस्मा आवश्यक है क्योंकि यह हमको मसीह में रखता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:26-27)। बाइबल बताती है. कि बपतिस्मा हमारे उद्धार के लिए आवश्यक है। "उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर

के वश में हो जाने का अर्थ है)'' (1 पतरस 3:21)।

परमेश्वर की हर आज्ञा महत्त्वपूर्ण है, और बपतिस्मा परमेश्वर की आज्ञा है ''और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे'' (प्रेरितों के काम 10:48)। यहां बिल्कुल साफ़ साफ़ बताया गया है कि उद्धार के लिए बपतिस्मा आवश्यक है। क्या आपने प्रभु की आज्ञा के अनुसार बपतिस्मा ले लिया है?

क्या मुझे सही उद्देश्य के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है? बेशक मसीह की हर आज्ञा का कोई न कोई कारण होता है। प्रभु भोज लेने की आज्ञा में भी यही बात लागू होती है। इसे परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार लेना आवश्यक है। ''इसीलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा'' (1 कुरिन्थियों 11:27)। जब तक हम सही उद्देश्य के लिए आज्ञा नहीं मानते हैं तब तक हमारा आज्ञा मानना किसी काम का नहीं है। बपतिस्मा लेने के लिए परमेश्वर की आज्ञा में भी यही बात है। उद्धार पाने के लिए विश्वास करने, मन फिराने, और अंगीकार करने के बाद बपतिस्मा लेना आवश्यक है। ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:16)। यीशु उद्धार को बपतिस्मे के बाद रखता है, न कि उससे पहले।

बपतिस्मा नया जन्म दिलाता है। नया जन्म बपतिस्मा लेने के बाद होता है। मसीह में बपतिस्मा लेने वाले लोग बपतिस्मे से जीवन के नयेपन के लिए जी उठते हैं। ''अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें'' (रोमियों 6:4)।

बपतिस्मा हमको मसीह की देह या कलीसिया में लाता है। देह कलीसिया है (कुलुस्सियों 1:18)। परमेश्वर के वचन के द्वारा पवित्र आत्मा की अगुआई से लोगों को मसीह की देह या कलीसिया में बपतिस्मा दिया जाता है। ''क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया'' (1 कुरिन्थियों 12:13)।

बपतिस्मे का उद्देश्य स्पष्ट है और मनुष्य को चाहिए कि वह इसे बिगाड़े ना। उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है। क्या आपने बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लिया है?

क्या बपतिस्मा डुबकी है या छिड़काव या फिर उण्डेलना? बपतिस्मा दिया जाने का ढंग उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना इसका उद्देश्य। बाइबल के अनुसार बपतिस्मा पानी में दफ़नाए जाना है। यीशु ने पानी के अंदर जाकर और पानी में से बाहर आकर बपतिस्मा लिया था। ''और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा'' (मत्ती 3:16)। यीशु द्वारा लिया गया बपतिस्मा दफ़नाए जाना भी था और पानी में भी (मरकुस 1:9-10)।

यूहन्ना जब बपतिस्मा देता था तो उसके लिए ''बहुत जल'' चाहिए होता था।

‘‘यूहन्ना भी शालेम के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था, क्योंकि वहाँ बहुत जल था, और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे’’ (यूहन्ना 3:23)।

दो अवसरों पर बाइबल साफ़-साफ़ बताती है कि बपतिस्मा दफ़नाए जाना है। पौलुस ने रोमियों के नाम पत्र में कहा, ‘‘अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें’’ (रोमियों 6:4)। कुलुस्सियों से उसने कहा, ‘‘और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे’’ (कुलुस्सियों 2:12)।

मनुष्य के पास बपतिस्मा देने के बहुत से ढंग हैं, परन्तु बाइबल में केवल एक ढंग बताया गया है। बाइबल के अनुसार लिया गया बपतिस्मा उद्धार के लिए पानी में दफ़नाए जाना ही है। क्या आपने बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लिया है?

बपतिस्मा कौन ले सकता है? मनुष्यों की बनाई शिक्षाओं में बताया जाता है कि बच्चों को बपतिस्मा दिया जा सकता है। बाइबल बताती है कि वचन को आनन्द से ग्रहण कर लेने वालों को बपतिस्मा दिया जाता है। ‘‘अत: जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए’’ (प्रेरितों के काम 2:41)।

बाइबल बताती है कि बपतिस्मा केवल विश्वास करने वालों को दिया जा सकता है “जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा’’ (मरकुस 16:16)।

बाइबल बताती है कि बपतिस्मा मन फिराने वालों को दिया जा सकता है। पतरस ने उनसे कहा, ‘‘मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे’’ (प्रेरितों के काम 2:38)।

मन फिराना, जीवन को बदलने से, मन को बदलना है। पुरुषों और स्त्रियों को बपतिस्मा दिया जाता था परन्तु बच्चों को कभी बपतिस्मा नहीं दिया गया “परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री, बपतिस्मा लेने लगे’’ (प्रेरितों के काम 8:12)।

बाइबल बताती है कि उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा आवश्यक है। क्या आपने प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार बपतिस्मा लिया है? यदि नहीं लिया तो ले लेना चाहिए ‘‘अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल’’ (प्रेरितों के काम 22:16)।

‘‘बपतिस्मा हमें बचाता है’’

“आपने सुना होगा”
जॉन स्टेसी

“प्रभु की स्तुति में गाते समय यदि साथ में बाजों को बजाया जाए, तो इस से कुछ अंतर नहीं पड़ता” शायद ऐसा कहते लोगों को आपने सुना होगा। पिछले पाठ में हम ने इसी विषय पर बाइबल के नए नियम में मिलनेवाले प्रत्येक पद को देखा था, और पाया था कि वहां हर जगह गाने के लिये कहा गया है, बजाने के लिये नहीं।

जहां तक बाजों को बजाने की बात का प्रश्न है, उसके लिये केवल पुराने नियम में ही पढ़ा जा सकता है। किन्तु पुराने नियम के बारे में पौलुस गलातियों 5:4 में इस प्रकार से कहता है, “तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।” यहां मसीही लोगों से पौलुस यह कह रहा था, कि यदि धार्मिक बातों के सम्बन्ध में वे मूसा की व्यवस्था को मानना चाहते हैं तो फिर वे मसीह से अलग हैं और उसके अनुग्रह से गिर गए हैं। यदि यह बात उस समय सच थी, तो क्या आज भी उन लोगों के लिये, जो पुराने नियम की बातों पर चलना चाहते हैं, यह बात वैसे ही सच नहीं हैं? अनेकों लोग आज इस बात से परिचित नहीं हैं कि मसीही आज मूसा के पुराने नियम के अधीन नहीं हैं। कुलुस्सियों 2:14 में पौलुस ने कहा था, “और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला, और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया।” यहां उसके कहने का अभिप्राय इस बात से है, कि जब यीशु क्रूस के ऊपर मरा था तो मूसा की व्यवस्था का उस समय अंत हो गया था। इब्रानियों 8:6 में लिखा है, “क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है।” किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें आज पुराने नियम की कोई आवश्यकता नहीं है। पुराने नियम का अपना एक विशेष महत्व है, जिसके विषय में हमें रोमियों 15:4 में मिलता है। किन्तु आज यदि कोई परमेश्वर की स्तुति में बाजों का उपयोग इसलिये करना चाहता है क्योंकि दाऊद ने पुराने नियम में किया था, तो फिर उसे पशुओं के बलिदान भी करने चाहिए, पुराने नियम के त्योहारों को भी मानना चाहिए, शनिवार को उपासना का दिन मानना चाहिए, और धूप इत्यादि जलानी चाहिए। क्योंकि यदि एक चीज को वहां से लिया जा सकता है तो फिर अन्य बातों को भी मानना चाहिए पर यदि आज कोई बाजों का इस्तेमाल इसलिये करना चाहता है क्योंकि वह सोचता है कि स्वर्ग में उनका इस्तेमाल किया जाएगा, तो फिर उसे ब्याह-शादी की रस्म से इन्कार करना होगा, क्योंकि बाइबल में लिखा है कि स्वर्ग में ब्याह-शादी नहीं होगी। बात वास्तव में यह है, कि यदि हम केवल परमेश्वर को ही प्रसन्न करना चाहते हैं अपने जीवन और अपनी उपासना से, तो हमें उसके वचन पर बिना कुछ जोड़े और बिना उसमें से कुछ घटाए, उसकी इच्छानुसार चलना चाहिए।

क्रूस का कष्ट और महिमा

मत्ती 21:1.11; 26:6-13; मरकुस 11:1-11; 14:3-9; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:1-19

चार्ल्स बी. हॉज

''जब वह जा रहा था; तो वे अपने कपड़े मार्ग में बिछाते जाते थे। और निकट आते हुए जब वह जैतून पहाड़ की ढलान पर पहुंचा, तो चेलों की सारी मण्डली ... आनन्दित होकर बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी'' (लूका 19:36,37)।

कितना बढ़िया दिन था! कितना बढ़िया सप्ताह था! यह उस सप्ताह का आरम्भ ही था जब परमेश्वर का पुत्र यीशु मरा! यह सप्ताह परमेश्वर के सबसे बड़े काम अर्थात् क्रूस के द्वारा उसके काम का सप्ताह था! यह वह सप्ताह था, जिसने दुनिया को बदल दिया, जिसने मुझे बदल दिया!

विवरणों को इकट्ठा करने पर, बाइबल से मसीह के जीवन के केवल चालीस से अधिक सप्ताहों का ही पता चलता है, तौभी उसकी मृत्यु के सप्ताह का ईश्वरीय विवरण उसकी गतिविधियों की कई बातें देता है। इस एक सप्ताह में यीशु द्वारा किए गए कामों से नये नियम को मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों का एक तिहाई भाग भर जाता है: यूहन्ना रचित सुसमाचार में तो आधा है। केवल स्थान दिए जाने से पता चल जाता है कि उस सप्ताह का महत्व सबसे अधिक है।

अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने यरूशलेम में अधिक समय नहीं बिताया। अब उसने यरूशलेम को जाने का दृढ़ निश्चय किया (लूका 9:51)। हालात अपने हाथ में होने पर भी वह यरूशलेम में मरने गया।

इस दौरान यीशु ने क्या किया? उसने सिखाया! वह क्रूस पर भी सबक दे रहा था! यहूदियों का दावा था कि उन्हें मसीहा की आवश्यकता है; परन्तु जब वह आया तो उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया! उसने मसीहा की उनकी अवधारणा को पूरा नहीं किया। क्या वह हमारी अवधारणाओं के अनुसार सही है?

आइए, उस सप्ताह को देखते हैं, जिसने दुनिया को बदल दिया। पूरा अनन्तकाल उसी पर निर्भर है कि यीशु ने इस सप्ताह में क्या किया और हम उसे कैसे मानते हैं।

अभिषेक

रविवार की पहली घटना यीशु का अभिषेक था (मत्ती 26:6-13; मरकुस 4:3-9; यूहन्ना 12:1-8)। वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर पर था! ''वहां उन्होंने उसके लिए भोजन तैयार किया, और मारथा सेवा कर रही थी, और लाजर उन में से एक था, जो उसके साथ भोजन करने के लिए बैठे थे'' (यूहन्ना 12:2)। भोजन के समय मरियम ने बहुमूल्य इत्र से यीशु का अभिषेक किया। इस इत्र का दाम एक आम आदमी की सालभर की मज़दूरी के बराबर था।

यहां हमें ग्रहण करने पर सबक मिलता है। अपने जीवनभर यीशु देता ही रहा था। संकट के समय में पाने से शायद देना आसान होता है, परन्तु यीशु ने दोनों ही बातें सिखाईं।

यहां यहूदा के वास्तविक स्वभाव का आधार मिलता है, जब उसने कहा, ''यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों न दिया गया ? ...'' (यूहन्ना 12:4-6)। यह आश्चर्यजनक है कि प्रेरितों को कैसा लगा कि वे लोगों के बीच यीशु की आलोचना कर सकते हैं! यीशु को उनकी डांट कठोर और अपमानजनक लगी थी।

परोपकार हमारे लिए और दूसरों के लिए आशीष है, परन्तु यीशु की सेवा परोपकार से अधिक महत्वपूर्ण है। यीशु को या यीशु के लिए दिया गया कुछ भी "व्यर्थ'' नहीं हो सकता। यीशु ने यहूदा के दोषपूर्ण उद्देश्यों को प्रकट किया और प्रेम के मरियम के अनमोल उपहार का सम्मान किया। प्रेम से यीशु को दिया गया कुछ भी थोड़ा ही है।

इसी में हम एक और सबक देखते हैं कि सच्चे मित्रों की कीमत आंकी नहीं जा सकती। पहले यीशु ने अपने मित्र लाजर को मुर्दो में से जिलाया था (यूहन्ना 11)। लाजर का जी उठना यहूदियों के लिए यीशु को क्रूस पर चढ़ाने का बहाना बन गया था। हमारे भले काम कई बार हमारे लिए परेशानी का कारण भी बन जाते हैं।

विजयी प्रवेश

यीशु का "महिमामय स्वागत'' कभी नहीं हुआ था। इसके लिए उसने यह समय चुना (देखें मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:12-15)। वह गधे पर चढ़कर यहूदियों के राजा के रूप में नगर में गया। ऐसा करके उसने लोगों को अपने विषय में निर्णय लेने के लिए विवश किया। "मुझे स्वीकार करो या मार डालो!'' वह कह रहा था। उसने सावधानीपूर्वक अपने "विजयी प्रवेश'' की योजना बनाई।

उसने दो चेलों को गधी का एक बच्चा लाने के लिए भेजा, जिस पर कोई सवार न हुआ हो। यह आश्चर्यजनक है! गधी के बच्चे का मालिक यीशु को जानता होगा और उस पर विश्वास करता होगा। यीशु को किसी से गधा मांगना पड़ा, क्योंकि वह "बिन पैसे के राजा'' था। वह प्रजा के पास गया, जबकि आम तौर पर प्रजा राजा के पास आती थी।

लोगों ने रास्ते में उसके आगे डालियां और कपड़े बिछा दिए। वे ''होशाना'' कहते हुए पुकार रहे थे, जिसका अर्थ है, ''बचाओ, हम प्रार्थना करते हैं।'' उसके शानदार प्रवेश से जकर्याह 9:9 की भविष्यवाणी पूरी हो गई।

यरूशलेम पहुंचने पर यीशु भावुक हो गया, उसका मन दुख से टूट गया। वह यरूशलेम पर रोया (लूका 19:41)। उन लोगों के लिए उसका रोना सुनाई दे रहा था, जिन्होंने उसे ठुकराना था। यरूशलेम परमेश्वर का चुना हुआ नगर था। दस हजार यादें मिट रही थीं यानी समय तेजी से बीत रहा था। यरूशलेम पूरी तरह से नष्ट किया जाने वाला था (67ई.-70ई.)।

शांतिपूर्वक गधे पर सवार होकर यीशु नगर में आया। उसके कामों से रोमियों को कोई परेशानी नहीं हुई, जिन्होंने शीघ्र ही उसे क्रूस पर चढ़ाना था।

रविवार की भीड़ में गलीली लोग थे; परन्तु गुरुवार और शुक्रवार वाली भीड़ यहूदिया के लोगों की थी और यही भीड़ उसकी मृत्यु की मांग करने वाली थी। शांति के राजकुमार के नगर में आने पर उसका आदर महिमा भरे गीतों से किया गया था, परन्तु इसने उसके शत्रुओं को कार्रवाई करने के लिए विवश कर दिया। उन्हें लगा कि लोग उसके पीछे हो लेंगे (यूहन्ना 12:19)।

फरीसी घबरा गए थे! उन्होंने यीशु को अपने चेलों को डांटने (चुप कराने) की आज्ञा दी, पर यीशु ने इनकार कर दिया। यदि उसके चेले उसकी महिमा न करते तो पत्थरों ने उसकी महिमा के लिए पुकार उठना था (लूका 19:40)। यह ''महिमा भरा स्वागत'' यादगारी था। यरूशलेम ने तो सुनने से इनकार कर दिया, लोगों को देखने में दिक्कत नहीं आई।

यीशु का ''महिमा भरा स्वागत'' हुआ था। क्या हम भी वैसे ही उसका स्वागत करेंगे?

क्रूस और मार्ग ही नहीं है।

हम क्रूस पर चढ़ाए मसीह का प्रचार करते हैं

रॉन ब्रायंट

सुसमाचार में मसीह का क्रूस सबसे महत्वपूर्ण है। छुटकारे की पूरी योजना मनुष्य के पापों के लिए मसीह की मृत्यु के तथ्य पर ही टिकी है। फिर भी क्रूस का प्रचार पहली सदी के श्रोताओं के लिए ठोकर का कारण था। क्रूस पर चढ़ाया गया मसीहा समय के उस काल में यहूदियों और यूनानियों दोनों की सोच के विपरीत था।

क्रूस पर चढ़ाएं गए मसीहा का प्रचार करने का अर्थ यहूदियों की पूर्वधारणा में खलबली पैदा करना और बहस को बढ़ावा देना था (देखें प्रेरितों 26:23)। यहूदी लोगों के लिये विजयी मसीहा की उम्मीद जो दाऊद और सुलैमान के समय के राज्य की शान को लौटा पाए। यहूदी व्यक्ति के लिए इस दावे का खण्डन करने के लिए कि यीशु ही मसीहा है, क्रूस ही काफ़ी था। यहां पर यहूदी व्यक्ति के लिए यह जानने से पहले अशुद्ध होना आवश्यक था। यहूदी लोग चिह्न मांगते थे, परन्तु उनके लिए "चिह्न" को देखने के लिए अपनी आंखों को खोलना आवश्यक था (रोमियों 1:3, 4)।

अन्य जातियों के लिए भी समझने के लिए भुलाना आवश्यक था, परन्तु थोड़ा अलग ढंग से। वे किसी भी सिस्टम के "लाभों", और "हानियों" को तौलने के लिए तैयार थे मगर उनमें यह समझ नहीं थी, जो उन्हें मसीह में विश्वास दिला सकती। यहूदी और यूनानी दोनों की एक मान्यता थी जो उनके लिए "क्रूस पर दिए उद्धारकर्त्ता" को मानने में बाधा थी।

परन्तु मसीह का प्रचार करना आसान नहीं था। क्योंकि यीशु के प्रचार में विजेता के

रूप में यहूदियों को खुश करने और दार्शनिक के रूप में अन्य जातियों को खुश करने के लिए कुछ नहीं था। उसका प्रचार क्रूस पर यीशु नासरी के रूप में किया जाना था।

"क्रूस पर दिए मसीह" का प्रचार मनुष्य की ओर से नहीं है! यह परमेश्वर की ओर से है! क्रूस में ही मनुष्यजाति के उद्धार के लिए परमेश्वर का बड़ा दर्शन अमल में आता है। परमेश्वर की सामर्थ और समझ (1 कुरिन्थियों 1:18-20; रोमियों 1:16, 17) अपने आपको इस प्रकार से दिखाते हैं जो मनुष्यों के पहले से मान लिए गए मापदण्डों से मेल नहीं खाते, और हर बात में परमेश्वर का तरीका ऐसे मापदण्डों से आगे होता है। उद्धार पाने वालों के लिए क्रूस का प्रचार परमेश्वर की समझ भी है और सामर्थ भी (1 कुरिन्थियों 1:18-31)।

पतरस का विश्वास

ओ. पी. बेयर्ड

यीशु कौन है?

यीशु द्वारा अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ किए जाने से पहले परमेश्वर ने उसके लिए मार्ग तैयार करने के लिए यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को भेजा। यूहन्ना का प्रचार था, "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।" और फिर बहुत से लोगों ने उससे बपतिस्मा लिया (मत्ती 3:6)। "जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और यीशु भी बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल गया, और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर के समान उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी हुई: 'तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं' " (लूका 3:21, 22)।

यीशु के बपतिस्मा लेने से पहले यूहन्ना उसे एक धर्मी जन के रूप में तो जानता था, परन्तु उसे यह पता नहीं था कि वही ख़्रिस्तुस अर्थात् मसीहा है। और यूहन्ना ने यह गवाही दी: "मैंने आत्मा को कबूतर के समान आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया। मैं तो उसे पहिचानता नहीं था, परन्तु जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा, 'जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है।' और मैंने देखा, और गवाही दी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है' " (यूहन्ना 1:32-34)।

पतरस उद्धारकर्त्ता से मिलता है

"दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जन खड़े हुए थे, और उसने यीशु पर जो जा रहा था, दृष्टि करके कहा, 'देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है।' तब वे दोनों चेले उसकी यह सुनकर यीशु के पीछे हो लिये। उन दोनों में से, जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिये थे; एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। उसने पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उससे कहा, हम को ख़्रिस्त अर्थात् मसीह, मिल गया।' वह उसे यीशु के पास लाया। यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा,

'तू युहन्ना का पुत्र शमौन है: तू कैफा अर्थात् पतरस कहलाएगा' " (यूहन्ना 1:35-37, 40-42)। "पतरस" और "कैफा" दोनों नामों का अर्थ "पत्थर" है, जो बड़ी चट्टान नहीं बल्कि उसमें से टूटा हुआ कंकर या पत्थर होता है।

विश्वास का पतरस का अंगीकार

यीशु की शिक्षा और उसके चमत्कारी चिह्नों से उसके चेलों को यह विश्वास हो गया कि वही मसीह है। परन्तु सुननेवालों में से सभी लोगों को विश्वास नहीं हुआ।

"यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया, और अपने चेलों से पूछने लगा, 'लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?' उन्होंने कहा, कुछ तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं, और कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।' उसने उनसे कहा, 'परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?' शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।' यीशु ने उसको उत्तर दिया, 'हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है" (मत्ती 16:13-17)। वही विश्वास आज लोगों को परमेश्वर की आशिषें दिलाता है, परन्तु पतरस के समय की तरह ही, संसार के लोगों का इस बारे में अलग-अलग विचार हैं कि यीशु कौन था।

बाद में यीशु कफरनाहूम में एक बड़ी भीड़ को सिखा रहा था। लोगों की बड़ी भीड़ लौट गई और वह इसलिए वापस चली गई क्योंकि उसकी शिक्षा उन्हें समझ में नहीं आई। उसके चेलों को भी उसकी शिक्षा समझ नहीं आई थी, परन्तु जब यीशु ने उनसे पूछा कि " 'क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?' शमौन पतरस ने उसको उत्तर दिया, 'हे प्रभु, हम किसके पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। और हम ने विश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है' " (यूहन्ना 6:67-69)। चेलों की समझ सीमित थी परन्तु मसीह में उनके विश्वास, और उस पर भरोसा रखने, और उसकी सिखाई हुई बातों ने उन्हें सब बातों पर भरोसा रखना और सच मानना सिखा दिया। मसीह में विश्वास आज भी यही काम करता है।

हमारे पास आज अनन्त जीवन की बातें हैं। जब यीशु अपने चेलों को छोड़कर चला गया तो उसने उन्हें अपना वचन देने के लिए पवित्र आत्मा को भेज दिया। उन्होंने उसका वचन हमें नये नियम में लिखकर दे दिया। हमें विश्वास उसी वचन को पढ़ने या सुनने से होता है (रोमियों 10:17)। क्रूस पर अपने चढ़ाए जाने से एक रात पहले यीशु ने अपने चेलों से कहा, "मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा" (यूहन्ना 16:12-15)।

क्या हमारा विश्वास कैसरिया फिलिप्पी और कफरनाहूम में जताए गए पतरस के विश्वास जैसे वाला है? यदि हां, तो हमारा विश्वास मसीह में है। और हम उस पर पूरा भरोसा रखते हैं, और उसकी सब बातों को जो वह सिखाता है, मानने के लिए अपने दिलों को खोल देंगे। क्योंकि वह जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।

पति और पत्नी

क्लेरेंस डीलोच, जूनि.

"... दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं" (1 पतरस 3:7)।

नये नियम में पति-पत्नी सम्बन्ध पर सबसे बढ़िया वचनों में से एक 1 पतरस 3:1-7 में मिलता है। पतरस वैवाहिक आनन्द की तीन आवश्यक बातों पर ज़ोर देता है।

- अधीनता
- लिहाज
- संहयोग

पतियों को जिम्मेदारी की चार बातें याद दिलाई गई हैं:

1. शारीरिक सांझ: "जीवन निर्वाह करो"
2. बौद्धिक सांझ: "बुद्धिमानी से"
3. भावनात्मक सांझ: "उसका आदर करो"
4... आत्मिक सांझ: "जिससे तुम्हारी प्राथनाएं रुक न जाएं"

सफल और सुखी वैवाहिक जीवन की कुंजी दो लोगों के मनों, हृदयों, शरीरों और जीवनों की एक-दूसरे के प्रति वचनबद्धता है। मसीही परिवार में पति और पत्नी "दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं।" जब दोनों मसीह के सामने, और एक-दूसरे के सामने समर्पण कर देते हैं तो विवाह सुखी जीवन बन जाता है।

जो कुछ पतरस ने कहा उसको ध्यान में रखकर इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए अपने वैवाहिक जीवन में जोड़ लें:

1. क्या मैं स्वर्ग में पहुंचने के अपने जीवनसाथी के प्रयासों में सहायता कर रहा/रही हूं या रुकावट बन रहा/रही हूं?
2. क्या मैं अपने साथी की आत्मिक उन्नति के लिए खुशनुमा माहौल में योगदान दे रहा/रही हूं?
3. क्या हम एक-दूसरे के व्यक्तित्व, मनोभावों आदि को समझने में बढ़ रहे हैं?
4. क्या मैं अपने साथी के अहसास और भावनाओं के प्रति अति संवेदनशील होना सीख रहा/रही हूँ या मैं उसकी परवाह नहीं करता/करती हूं?
5. क्या यह विवाह सुखद या जी का जंजाल है, और इन दोनों में से मेरा कारण कौन सा है?

इस चौक लिस्ट के प्रकाश में आपका विवाह कैसा चल रहा है?